विस्तार पत्रक/भा.कृ.अनु.प/रा.उ.अनु.के./2021/02

ऊँटों में सजावटी ऊन कल्पन का महत्व

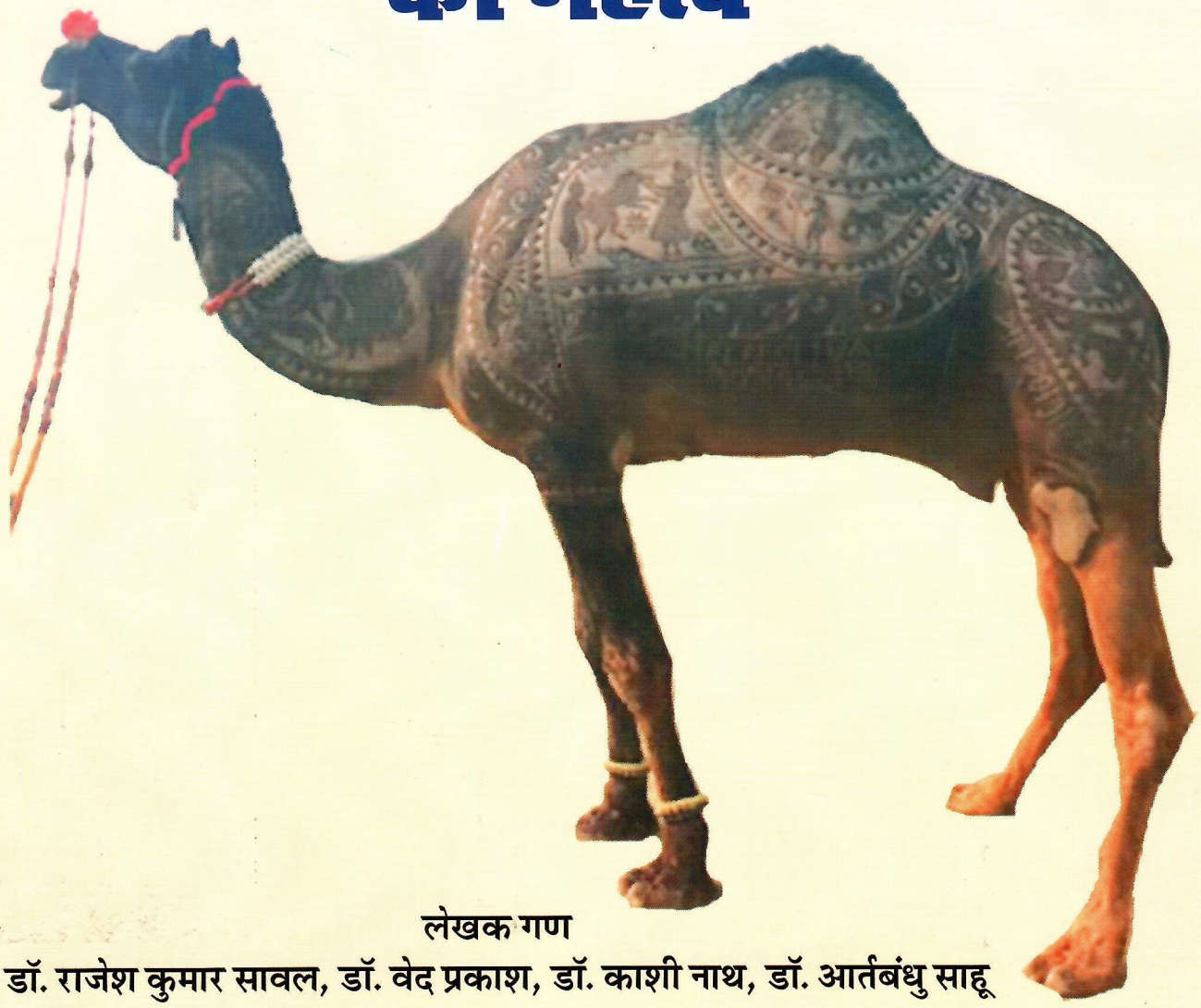

लेखक गण
डॉ. राजेश कुमार सावल, डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. काशी नाथ, डॉ. आर्तबंधु साहू

सजावट के लिए ऊन कल्पन कर ऊँट का व्यावसायिक दृष्टिकोण : समारोह के अवसर पर, सजे हुए ऊँटों को दो या दो-दो की दो कतारों में सबसे आगे चलाया जाता है। स्वागत हेतु ऊँटों को आगे खड़ा किया जाता है। शादी के समारोह में ऊँटों को सजाकर बारात के आगे-आगे चलाया जाता है। बारात के स्वागत के लिए खड़ा किया जाता है। मरू प्रदेश में तो दूल्हा एवं दुल्हन को सजाकर ऊँट पर बिठा कर शादी स्थल पर ले जाया जाता है। कुछ स्थानों पर ऊँट का नृत्य भी समारोहों की शोभा बढ़ाता है। ऐसे में ऊन कल्पन से तैयार सजावटी ऊँट की महत्ता और बढ़ जाती है। अतः व्यावसयिक दृष्टिकोण से ऊन (बाल) कल्पन से तैयार सजावटी ऊँट बहुत उपयोगी हो सकता है।

पशु को नियंत्रण में करना : कार्य शुरू करने से पहले पशु को नियंत्रण में किया जाता है ताकि सुविधा से ऊन कल्पन का कार्य किया जा सके। इसके लिए ऊँटो में मोरखा लगाया लगाया जाता है। ऊँटों को मोरखा बाँधने के लिए पहले उनकी थूथन के ऊपर रस्सी डालकर काबू में कर लें। फिर ऊपर व नीचे वाले होंठ को हाथ से पकड़े। अब रस्सी के गाँठ बांध कर कान के ऊपर से दूसरी तरफ रस्सी को उस गाँठ में से निकालिए। इसके पश्चात पशु के कान के पीछे गर्दन पर रस्सी की एक छोटी-सी गांठ बांधे, जिसे 'जाड़िया' कहा जाता है, फिर एक गांठ जबड़े के नीचे की ओर से दूसरी तरफ उसी स्थान पर जबड़े को बांधे। लम्बी रस्सी को पीछे बंधी हुई रस्सी में से निकालकर मोरखा को थोड़ा तंग करें ताकि पशु पर पकड़ मजबूत हो जाए। प्रजनन काल में झूट (रट) में आए नर ऊँट को नथ लगाकर आसानी से काबू में लाया जा सकता है।

ऊँट के अगले एवं पीछे के दोनों पैर बांधना : ऊँट को बैठाकर उसका उपचार, प्रजनन संबंधी कार्य एवं पशु शरीर पर आकृति उकेरने इत्यादि कार्य के लिए सर्वप्रथम ऊँट को अच्छी तरह से नियंत्रित/काबू में कर लेना चाहिए। इसके लिए ऊँट को बैठाकर उसके अगले दोनों पैर बांधना चाहिए। जरूरत के अनुसार एक बड़ी रस्सी द्वारा पिछले दोनों पैरों में रस्सी लपेटते हुए कमर पर बांधनी चाहिए या गांठ लगा देना चाहिए। ऊँट अच्छी तरह से नियंत्रित हो जाता है और पशु पर आकृति बनाने में आसानी होती है और पशु के शरीर के किसी भी हिस्से पर आसानी के आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं।

पशु का रंग : पशु का रंग आकृतियाँ उकेरने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यूँ तो ऊँट सफेद से भूरे रंग में भी पाए जाते हैं, परन्तु गहरा भूरा (काला) रंग इस कार्य के लिए उत्तम माना जाता है। इस रंग में कोई भी आकृति बहुत उभर कर प्रदर्शित होती है।

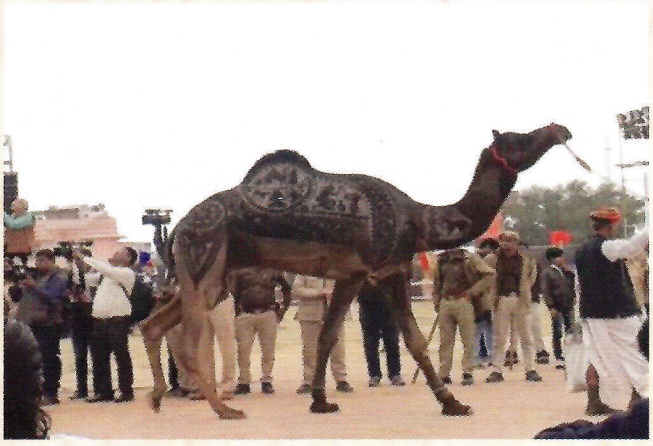

गहरे भूरे (काले) रंग के ऊँट पर
उभरी हुई आकृतियाँ

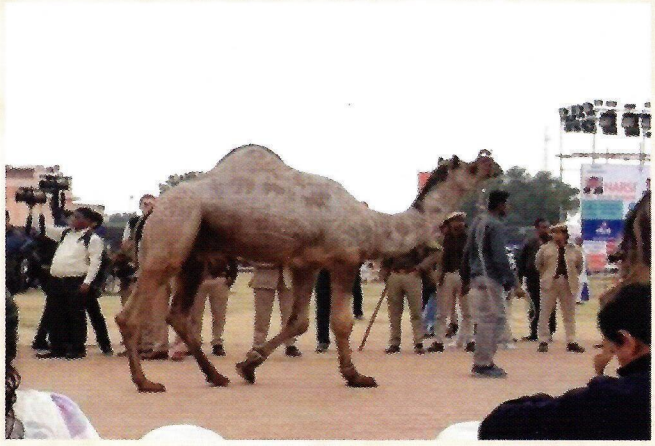

हल्के भूरे रंग के ऊँट पर
कम उभरी हुई आकृतियाँ

उष्ट्र शरीर पर आकृतियाँ उकेरने के लिए स्वस्थ पशु का चयन

आकृतियाँ उकेरने के लिए चयनित पशु में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है ताकि उकेरी हुई आकृतियाँ उसके शरीर पर अच्छी लगें :

1. पशु का रंग गहरा भूरा (काला) होना चाहिए ताकि उस पर ऊन का वैसा ही रंग मिले। गहरा रंग होने से पशु पर उकेरी हुई आकृतियां अच्छी तरह उभर आती हैं।
2. पशु के शरीर पर किसी भी तरह के जख्म अथवा चीरा (कट्स) न हों।
3. स्वस्थ चमड़ी पर उकेरी हुई आकृतियाँ उभरी हुई दिखाई देंगी। कई बार चीचड़ों के कारण, चमड़ी से सम्बंधित बीमारियों के कारण शरीर अस्वस्थ लगने लगता है।
4. नस्ल विशेष पशुओं का चयन करने से पशु को नस्ल सुधार के लिए भी कार्य में भी लिया जा सके।
5. बॉडी मास इंडेक्स एक से ऊपर होना चाहिए ताकि पशु कमजोर न दिखाई दें।

पशु शरीर को सजावटी ऊन कल्पन के लिए तैयार करना

पशु को समय-समय पर संवारने से वह स्वयं को साफ-सुथरा व ताजा महसूस करता है। दिन-प्रतिदिन पशु के साथ घुलने-मिलने से ऊन कतरते समय पशु कतराई करने वाले को तंग नहीं करता अन्यथा पशु हिलता-डुलता रहता है जिससे कार्य करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए पशु के साथ मित्रता होना आवश्यक है।

थुई का आकार

कूबड़ भोजन का एक भंडार है जिसका उपयोग शारीरिक जरूरत में कमी की अवधि के दौरान किया जाता है। मध्यम थुई पर आकृति बनाने में आसानी होती है क्योंकि इससे चमड़ी में खिंचाव रहता है। परन्तु थुई का बहुत छोटा होना या बिल्कुल न होना, कमजोर पशु की निशानी है जिस पर सजावटी ऊन कल्पन का कार्य उभर कर सामने नहीं आ पाता है।

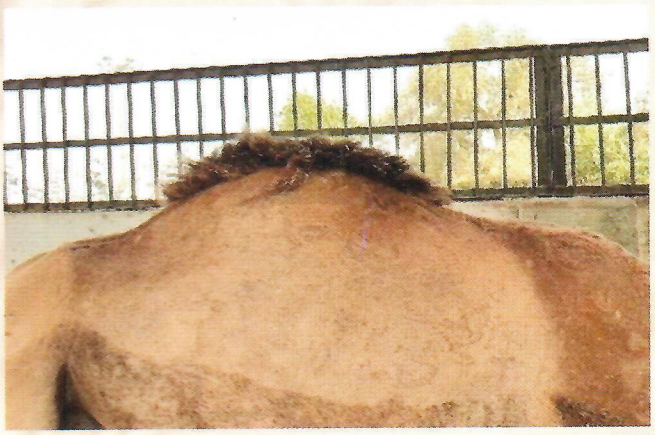

मध्यम थुई

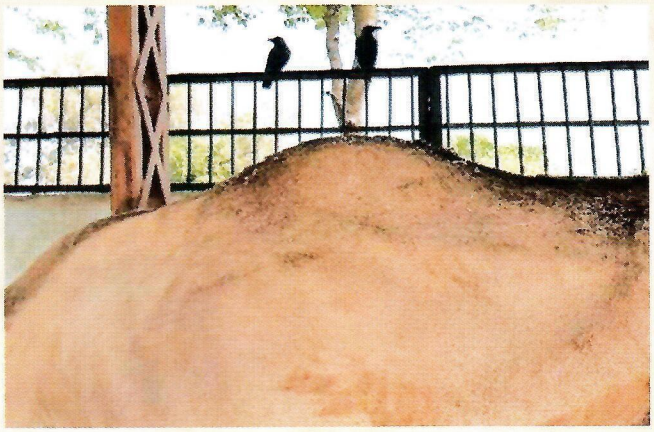

छोटी थुई

चीचड़ों का प्रकोप: चीचड़ की समस्या होने से चमड़ी खुरदरी, बाल कड़े और अपनी चमक खो देते हैं, कई बार चमड़ी में जगह-जगह घाव हो जाते हैं और पशु अस्वस्थ्य और कमजोर भी दिखने लगते हैं। अतः कतराई करने से पूर्व पशु के शरीर की जांच कर लें। चीचड़ लगे होने पर पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार दवा लगाएं। उसके पश्चात आकृति बनाने का कार्य करना आरम्भ करें।

पशु शरीर पर चमड़ी संबंधित घाव/बीमारियां: त्वचा की बीमारियों के कारण चमड़ी सख्त हो जाती है। लवणों की कमी के कारण चमड़ी में कई तरह के बदलाव आ जाते हैं जैसे जिंक की कमी से केराटनाईज होना, ताम्बे की कमी के कारण बाल/ऊन में लच्छा न बनना, जरूरी वसा अम्ल की कमी के कारण त्वचा की प्राकृतिक चमक में कमी इत्यादि। ऐसे में पशु का इलाज करवा कर ही उसे सजावट के लिए उपयोग में लेना चाहिए।

मांसपेशियों की रूप रेखा: चयन करते समय पशु के शरीर का विशेषकर जानवर की त्वचा घाव, फफूंद, चीचड़ इत्यादि के संक्रमण से रहित होना चाहिए। कमजोर जानवरों में उभरी हुई पसलियाँ होती हैं जो ऊन/बालों के कटने या कतरन के लिए एक समान सतह प्रदान नहीं करती हैं ।

पशु का खान पान : एक ऊँट को सजावटी कतराई हेतु तैयार करने में लगभग 10 दिन लग जाते हैं। ऐसे में पशु लगभग 8 घंटे तक रोजाना बंधा रहता है व कुछ भी सेवन नहीं कर पाता। इसलिए पशु हेतु विशेष आहार का प्रबंध करना चाहिए जैसे सूखा रिजका, चंवला (लोबिया) या फिर मूंगफली फसल का अवशेष (चारा) दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त खेजड़ी की पत्ती या पाला भी देना चाहिए ताकि पशु को संतुलित आहार मिल सके तथा चमड़ी और बाल में चमक बरकरार रहें। पशु के लिए चारे के साथ-साथ साफ पानी की भी व्यवस्था करनी चाहिए। हर रोज ऊन कतराई के पश्चात कुछ देर के लिए पशु को खुला छोड़ देना चाहिए ताकि वह टहल सके।

चित्रित की जाने वाली तस्वीरों की रूप रेखा बनाना : लगभग आधा सेन्टीमीटर के आकार के बाल/ऊन की कतरन (ट्रिमिंग) एक कैंची (क्लिपर) की मदद से एक समान सतह बनाकर तैयार की जाती है। इस सतह पर आकृतियों की रूप रेखा बनाई जाती है। जानवरों का शरीर एक कैनवास बन जाता है व आकृति उकेरने वाले को अपनी प्रतिभा और सोच अनुसार तस्वीरों की रूपरेखा को पहले कोरे कागज पर बनाया जाता है फिर हर आकृति को उसके स्वरुप में पेंसिल, कोयला इत्यादि से पशु के शरीर पर बनाया जाता है। पूरे शरीर की सतह पर तैयार हर आकृति को उकेरने के लिए उसके साथ का वह क्षेत्र (एरिया), जो काम में नहीं लिए जा रहा, को धीरे-धीरे साफ कर दिया जाता है या बाल बहुत महीन काटे जाते हैं।

कैंची का चयन : कैंची बहुत ही पैनी (नोकदार) होनी चाहिए ताकि बहुत बारीकी से किसी भी आकृति को सजाया/बनाया जा सके। इस प्रकार की कैंची से मूल आकृति के अंतिम आकार का शोधन करने में आसानी रहती है। कैंची पकड़ने वाले स्थान पर भी प्लास्टिक/टेप या रिंग गार्ड होना आवश्यक है ताकि कैंची चलाते समय उँगलियों में कोई घाव न हो और उसे सहजता से लम्बे समय के लिए काम में लिया जा सके। इसके अलावा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कैंची का वजन 50-70 ग्राम से अधिक न हो ताकि लम्बे समय तक इस्तेमाल करने से उँगलियों में दर्द न हो।

कैंची के अतिरिक्त शरीर के सतह को एक सार करने के लिए हस्त चलित क्लिपर या फिर बाल काटने वाली मशीन का इस्तेमाल किया जा सकता है। समतल सतह पर आकृति (डिजाईन) उकेर कर कैंची से महीन कटाई की जा सकती है ताकि कोई भी आकृति उभर कर सामने आए।

पूंछ पर ऊन की कतराई : कार्य करने से पूर्व पूँछ को अच्छी तरह से साफ कर उस पर आकृति को उकेरा जाता है। पूंछ को आमतौर पर उसकी शुरुआत में एक पीपल पत्ती को चित्रित करने के लिए डिजाइन बनाया जाता है। व्यापक सतह के कारण एक पत्ती के मध्य में या बहती हुई नसों की मध्य रेखा व उसी दिशा में बहती हुई वेंस को भी उकेरा जाता है, उसी रूप में विपरीत दिशा में भी डिजाइन बनाया जाता है।

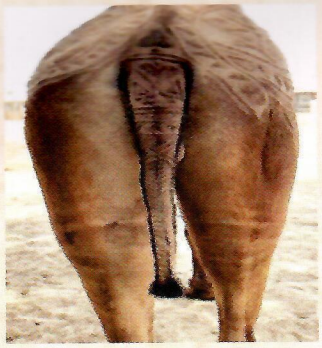

सजावटी ऊन कतराई का समय/मौसम : मरू क्षेत्र में सर्दी का मौसम समाप्त होने पर अगर ऊन (बाल) कटाई नहीं की जाए तो वे स्वयं ही झड़/गिर जाते हैं। चूँकि इस क्षेत्र में सर्दी बहुत कम समय के लिए होती है, इसलिए ऊन पर सजावट का कार्य सर्दी के मौसम की शुरुआत में किया जा सकता है। अधिकतर पशु मेले सर्दी के मौसम में आयोजित किये जाते हैं। अतः सजावटी तरह से कतरे हुए ऊँट को विशेष उत्सवों, कार्यस्थलों इत्यादि अवसरों पर इस्तेमाल कर अधिक आय अर्जित की जा सकती है।

कतराई पूर्व और पश्चात पशु की धुलाई : पशु के शरीर से पसीना निकलता है जो बाल/ऊन में रह जाता है, इसके अतिरिक्त त्वचा से तैलीय स्राव भी होता है। त्वचा स्राव के फलस्वरूप बाल/ऊन में त्वचा की सतह धूल, नमक, विभिन्न प्रकार के रोगाणुओं/फफूंद इत्यादि के संग्रह के लिए आधार बन जाती है, जो त्वचा में संक्रमण, खनिज असंतुलन का प्रमुख कारण है। ऊन कतराई से पूर्व और पश्चात पशु शरीर की धुलाई करने से ऊन में जमी गंदगी धुल कर साफ हो जाती है व साफ ऊन प्राप्त होती है। ऐसे में चीचड़ मारने वाली दवा को भी पानी में घोलकर पशु शरीर पर लगा देना चाहिए ताकि पशु बाह्य परजीवियों से मुक्त हो सके। कतरने से पूर्व, पशु शरीर की चमड़ी रोग मुक्त होने से आकृतियाँ भी अच्छी उभरेंगी।

कल्पन करते समय सावधानियां : अक्सर कल्पन करने के लिए पैनी कैंची का इस्तेमाल किया जाता है जो कि लम्बी चोंच जैसी व पैनी होती है। सावधानी से इस्तेमाल नहीं करने पर, कैंची से पशु शरीर पर कट्स लग जाते है जिनमें आगे चलकर घाव बन सकते हैं व मक्खी बैठने के कारण पशु अक्सर परेशान रहता है।

कल्पन की समय अवधि : कल्पन किए हुए ऊँट को 4 से 6 माह तक इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके पश्चात फिर से ऊन कल्पन कर उसे सजाकर ऐसे ही जुड़े कार्यों में काम में लिया जा सकता है।

कतराई द्वारा सजे ऊँट के शरीर के विभिन्न भाग

थुई के ऊपर बाल

थुई के ऊपर के बाल को गोलाकार रूप देना

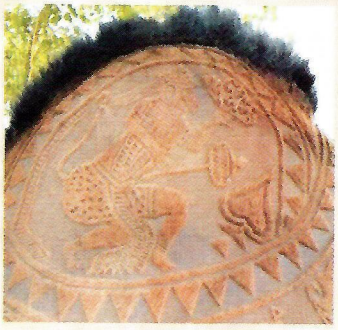

आकृति के रूप में हनुमानजी, बॉर्डर के लिए तिकोने और पान का पत्ता।

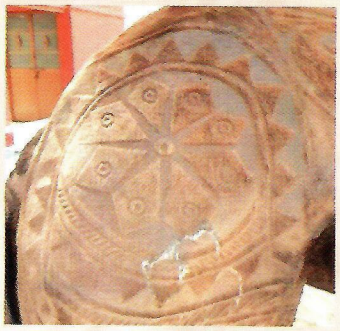

गोलाकार रूप में तिकोने बॉर्डर के साथ, पशु शरीर के दायें पुट्ठे पर बनाई गई आकृति

घुड़ सवार की आकृति उभारने के लिए ऊन की बहुत महीन कतराई

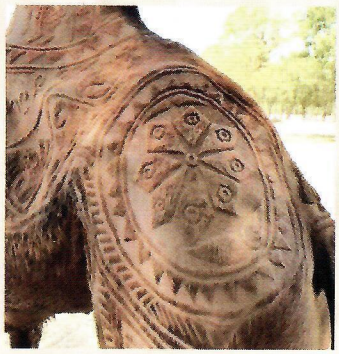

गोलाकार रूप में तिकोने बॉर्डर के साथ, पशु शरीर के बांये पुट्ठे पर बनाया गया चित्र

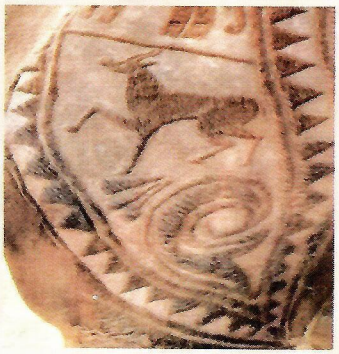

हिरन का उकेरा गया चित्र

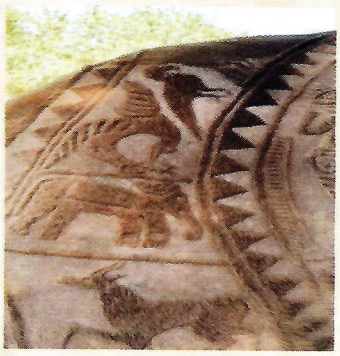

हाथी एवं कौवा का उकेरा गया चित्र

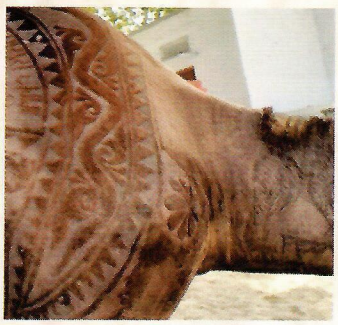

शरीर के आगे के भाग को डिजाईन बनाकर सजाना

मोर पक्षी की आकृति को गर्दन पर उकेरा गया

सजावट हेतु पान की आकार में बनाये गए चित्र जिसमें अन्दर से बाल कतराई

पान के पत्ते की आकार में जिसमें बाहर का गोला साफ किया

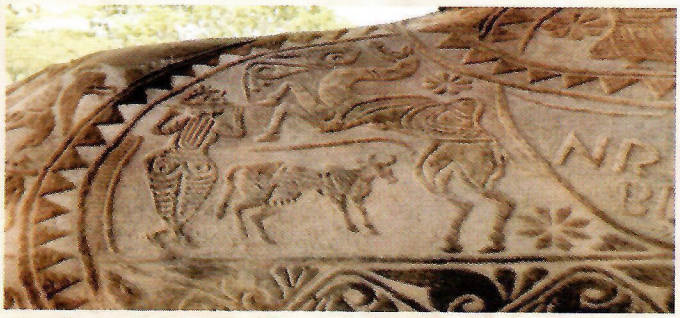

मोर पक्षी के आकार में पशु के शरीर पर उकेरा गया चित्र

पट्टीनुमा रूप में ऊन कतराई जिसे बॉर्डर की तरह इस्तेमाल किया

पट्टी नुमा रूप में ऊन कतराई जिसे बॉर्डर की तरह इस्तेमाल किया गया

पूरे शरीर पर एक दीवार की भांति प्रयुक्त कर महीन कतराई द्वारा उकेरे गए तरह-तरह के चित्र

सजावटी ऊन कतराई से आर्थिक लाभ : एक ऊँट पर सजावटी ऊन कतराई के लिए लगभग 10 दिन का समय लग जाता है, जिसमें लगभग 5000–6000 रुपए का खर्च होता है। समय की मांग को देखते हुए, सजावटी ऊँट विवाह समारोह में बारात स्वागत हेतु, बारात नेतृत्व करने के लिए, प्री वेडिंग शूट, मेलों में, सम्माननीय अतिथियों के स्वागत हेतु, आयोजनों के स्वागत द्वार पर शोभा हेतु इत्यादि में कम से कम रूपए 3,000 प्रति आयोजन के लिए बुकिंग शुल्क के रूप में लिया जाता है। सजावटी ऊन कतराई पर होने वाला खर्च तो दो आयोजनों में ही पूरा हो जाता है, शेष आमदनी ऊँट पालक के आर्थिक विकास हेतु सहायक होती है। संभव है अगर एक ऊँट को एक आयोजन प्रति सप्ताह मिले व वर्ष भर का पशु के खान पान का खर्च जोड़ कर भी रूपए 8,000 प्रति माह आमदनी हो सकती है। सजावटी ऊन कतराई से ऊँट पालक आमदनी युक्त सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर सकता है व इसके अतिरिक्त उस ऊँट को घरेलू आवागमन कार्यों के लिए भी इस्तेमाल में लिया जा सकता है।

प्रकाशित

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र,
पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़, बीकानेर 334 001
दूरभाष : 0151–2230183, फैक्स : 0151–2970153
ईमेल : nrccamel@nic.in वेबसाइट : www.nrccamel.icar.gov.in

मुद्रक : कल्याणी प्रिण्टर्स, बीकानेर